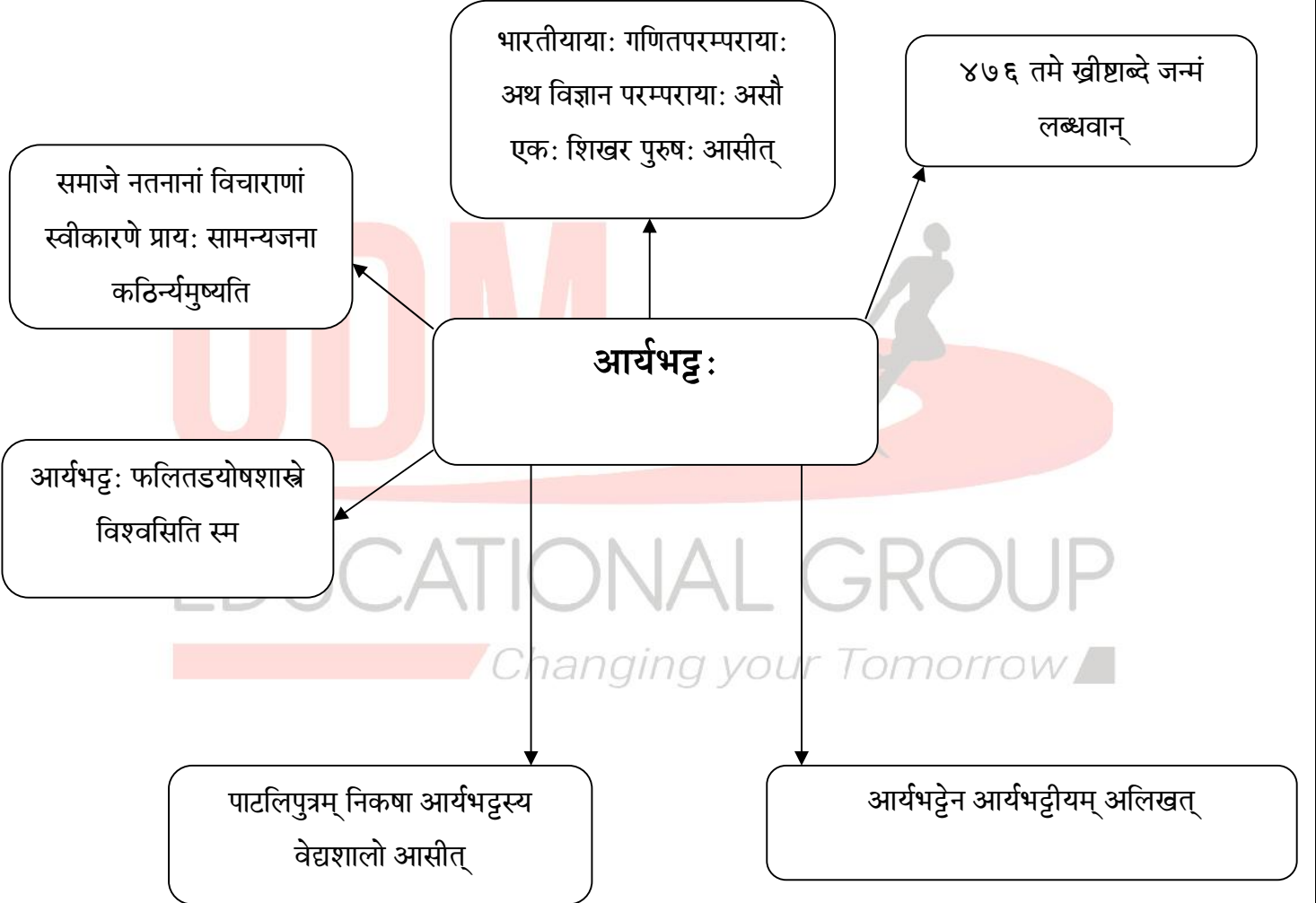


## Chapter- 14

## आर्यभट्टः

## STUDY NOTES

MIND MAP

आर्यभट्ट को अश्मकाचार्य नाम से भी जाना जाता है। यही कारण है कि इनके जन्मस्थान के विषय में विवाद है। कोई इन्हें पाटलिपुत्र का कहते हैं तो कोई महाराष्ट्र का।

आर्यभट्ट ने दशमलव पद्धति का प्रयोग करते हुए  $\pi$  (पाई) का मान निर्धारित किया। उन्होंने दशमलव के बाद के चार अंकों तक  $\pi$  के मान को निकाला। उनकी दृष्टि में  $\pi$  का मान है 3.1416। आधुनिक गणित में  $\pi$  का मान, दशमलव के बाद सात अंकों तक जाना जा सका है, तदनुसार  $\pi = 3.1416926$ ।

**भारतीयज्योतिषशास्त्र**—वैदिक युग में यज्ञ के काल अर्थात् शुभ मुहूर्त के ज्ञान के लिए ज्योतिषशास्त्र का उद्भव हुआ। कालान्तर में इसके अन्तर्गत ग्रहों का संचार, वर्ष, मास, पक्ष, वार, तिथि, घंटा आदि पर गहन विचार किया जाने लगा। लगध, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य, बालगंगाधर तिलक, रामानुजन् आदि हमारे देश के प्रमुख ज्योतिषशास्त्री हैं। आर्यभटीयम्, सौरसिद्धान्तः, बृहत्संहिता, लीलावती, पञ्चसिद्धान्तिका आदि ज्योतिष के प्रमुख संस्कृत ग्रन्थ हैं।

**आर्यभटीयम्**—आर्यभट्ट ने 499 ई. में इस ग्रन्थ की रचना की थी। यह ग्रन्थ 20 आर्याछन्दों में निबद्ध है। इसमें ग्रहों की गणना के लिए कलि संवत् (499 ई. में 3600 कलि संवत्) को निश्चित किया गया है।

**गणितज्योतिष**—संख्या के द्वारा जहाँ काल की गणना हो, वह गणितज्योतिष है। ज्योतिषशास्त्र की तीन विधाओं यथा—सिद्धान्त, फलित एवं गणित में यह सर्वाधिक प्रमुख है।